REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 10 | JULY - 2018

परम्परागत तथा सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में पुस्तकालय-उपयोग और उपयोग के उद्देश्यों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. मुरलीधर मिश्रा
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान.

सारांश

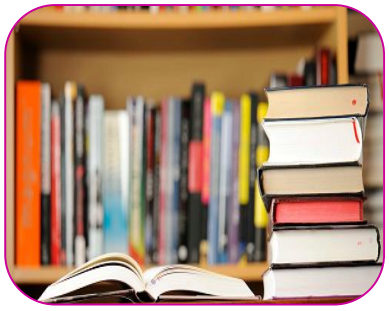

*परम्परागत तथा सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा पुस्तकालय-उपयोग और उपयोग के उद्देश्यों की तुलना करने के लिए 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का उपयोग किया गया। इस अध्ययन के न्यादर्श में शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ में परम्परागत पद्धति से संचालित अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम तथा सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम बी.एड. 'एनरिच्ड' कार्यक्रम से कुल 40 (प्रत्येक से **20**-20) शिक्षार्थी-अध्यापकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्शन विधि से किया गया। उपकरण के रूप में पुस्तकालय उपयोग पंजिका, सूचना प्रपत्र, संरचित अवलोकन प्रपत्र तथा असंरचित साक्षात्कार प्रपत्र का उपयोग किया गया। प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी के अंतर्गत आवृति विश्लेषण, प्रतिशत विश्लेषण, औसत एवं दण्डचित्रात्मक प्रस्तुतीकरण का उपयोग किया गया। निष्कर्ष रूप में समूह 'अ' व समूह 'ब' से सम्बद्ध शिक्षार्थी-अध्यापकों के प्रति सप्ताह पुस्तकालय उपयोग की अवधि में भिन्नता पायी गयी। समूह 'ब' की शिक्षार्थी-अध्यापक समूह 'अ' की तुलना में तीन श्रेणियों (ज्ञान प्राप्ति, पाठ्यक्रम तैयारी एवं विविध उपयोग) से सम्बन्धित उद्देश्यों के लिए पुस्तकालय का अधिक उपयोग करती हैं।*

प्रयुक्त शब्दावली: परम्परागत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम, सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम, पुस्तकालय-उपयोग की आवृत्ति, अवधि, उपयोग के उद्देश्य, वर्णनात्मक सर्वेक्षण

प्रस्तावना

अध्यापक शिक्षा संस्थान का पुस्तकालय उस संस्थान में शिक्षार्थी-अध्यापकों को दिये जाने वाले निवेशों से सम्बन्धित संसाधनों का प्रतिनिधित्व करता है। जिस स्तर के निवेश शिक्षार्थी-अध्यापकों को प्रदान दिये जाते हैं उनका प्रभाव पुस्तकालय के स्वरूप तथा इसके उपयोग पर भी प्रभाव पड़ सकता है। कई शिक्षण-अधिगम प्रविधियाँ/उपागम ऐसे हैं जिनमें शिक्षार्थी-अध्यापकों को पुस्तकालय की आवश्यकता प्रायः अधिक रहती है यथा - समस्या समाधान उपागम, परिचर्चा; लघु समूह, वृहत् समूह परियोजना, संगोष्ठी पर्यवेक्षित अध्ययन, विकासात्मक अध्ययन आदि। जब शिक्षार्थी-अध्यापकों के अधिगम हेतु अध्यापक शिक्षक छात्र केन्द्रित प्रविधियों/उपागमों का उपयोग करते हैं, तब शिक्षार्थी-अध्यापकों के पुस्तकालय उपयोग की आवश्यकता बढ़ सकती है। दूसरी ओर शिक्षक केन्द्रित मानी जाने वाली विधियों का उपयोग करने पर

पुस्तकालय उपयोग की आवश्यकता अपेक्षाकृत कम हो सकती है। प्रायः शिक्षार्थी-अध्यापक विषय-वस्तु को समझने, अतिरिक्त अध्ययन करने, विशिष्ट सूचनाओं का संकलन करने, अर्जित ज्ञान को सही सन्दर्भ में समझने, दत्त-कार्य की पूर्ति करने, परीक्षा की तैयारी करने आदि उद्देश्यों के लिए शिक्षार्थी-अध्यापक पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। संदर्भतः शिक्षार्थी-अध्यापकों को दिये जा रहे निवेश का सम्बन्ध उनके पुस्तकालय उपयोग से हो सकता है।

वनस्थली विद्यापीठ के शिक्षा संकाय में अध्यापक शिक्षा के दो कार्यक्रम चल रहे हैं। जिनमें एक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम शिक्षा में नवाचार के प्रयास के क्रम में (बी.एड. 'एनरिच्ड') चलाया जा रहा है। इसमें अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में शिक्षार्थी-अध्यापकों को किस प्रकार के निवेश दिए जायें; एक प्रभावी शिक्षक बनने हेतु विविध सम्प्रत्ययों, दक्षताओं और अन्य गुणों का विकास के लिए किस तरह की सामग्री पढ़ी जाये; किसी विषय सामग्री को किन प्रक्रियात्मक निवेशों (परिचर्चा, समस्या समाधान, प्रायोजना, कार्यशाला, व्यक्तिगत प्रस्तुतीकरण, पुस्तकालय कार्य आदि) द्वारा अर्जित किया जाना है, यह निर्णय प्रायः स्वयं शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा किया जाता है। पोरवाल (1999), लक्ष्मी एवं अन्य (2000), गोस्वामी एवं सुराणा (2002) एवं गोस्वामी (2003) के अध्ययनों से यह पता चलता है कि सहभागितापूर्ण शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का शिक्षार्थी-अध्यापकों के सम्प्रत्ययात्मक विकास एवं स्व-विकास पर सकारात्मक प्रभाव होता है। जब शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का निर्धारण स्वयं शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा किया जा रहा है, तब उनके पुस्तकालय उपयोग में भी विशिष्टता हो सकती है।

दूसरी ओर परम्परागत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के लिए पाठ्यक्रम पूर्व निर्धारित है। जिसके आधार पर शिक्षार्थी-अध्यापकों एवं अध्यापक शिक्षकों में शिक्षण-अधिगम व्यवहार होता है। इस पाठ्यक्रम में निर्धारित उद्देश्यों के साथ उन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपयोगी विषय सामग्री एवं प्राप्ति सन्दर्भों का उल्लेख होता हैं। जब पूर्व निर्धारित पाठ्यक्रम के साथ शिक्षार्थी-अध्यापक के पास अध्यापक शिक्षक के साथ अन्तःक्रिया के पर्याप्त अवसर रहते हैं तब शिक्षार्थी-अध्यापक पुस्तकालय का कितना उपयोग करते हैं? पुस्तकालय का प्रति सप्ताह औसतन कितनी अवधि तक उपयोग करते हैं? पुस्तकालय का उपयोग किन- किन उद्देश्यों के लिए करते हैं? निवेश एवं प्रक्रियागत अंतर होने पर क्या इन शिक्षार्थी-अध्यापकों के प्रति सप्ताह पुस्तकालय-उपयोग, पुस्तकालय उपयोग अवधि और पुस्तकालय उपयोग के उद्देश्यों में भी अंतर है? इन प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए परम्परागत तथा सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा पुस्तकालय-उपयोग की आवृत्ति और उपयोग के उद्देश्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

अध्ययन उद्देश्य

इस अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार हैं -

- परम्परागत तथा सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा किये जाने वाले प्रति सप्ताह पुस्तकालय-उपयोग की तुलना करना।
- परम्परागत तथा सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा किये जाने वाले प्रति सप्ताह पुस्तकालय उपयोग अवधि की तुलना करना।
- परम्परागत तथा सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा किये जाने वाले पुस्तकालय उपयोग के उद्देश्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

संक्रियात्मक परिभाषाएँ

इस अध्ययन में प्रयुक्त परम्परागत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम एवं सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का परिभाषीकरण इस प्रकार है-

अ. परम्परागत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम

इस अध्ययन में परम्परागत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम से तात्पर्य शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ द्वारा माध्यमिक शिक्षा स्तर हेतु अध्यापक तैयार करने हेतु पूर्व निर्धारित पाठ्यक्रम की सहायता से संचालित अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम 'बी.एड.' से है, इस अध्ययन में इसे समूह 'अ' से अभिहित किया गया है।

ब. सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम

इस अध्ययन में सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम से तात्पर्य नवाचार के क्रम में शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ द्वारा माध्यमिक शिक्षा स्तर हेतु अध्यापक तैयार करने हेतु शिक्षार्थी-अध्यापक उन्मुख एवं बिना पूर्व निर्धारित पाठ्यक्रम की सहायता से संरचनात्मक उपागम का अनुसरण करते हुए संचालित स्नातक स्तरीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम बी.एड. 'एनरिच्ड' से है, जिसमें शिक्षार्थी-अध्यापक स्वयं के प्रयासों से पाठ्यक्रम का विकास करती हैं। इस अध्ययन में इसे समूह 'ब' से अभिहित किया गया है।

अध्ययन विधि

अध्ययन के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए यथास्थैतिक आधार पर प्रदत्तों का संकलन करने के लिए 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण' विधि का उपयोग किया गया।

जनसंख्या

राजस्थान राज्य के टोंक जिले में स्थित वनस्थली विद्यापीठ द्वारा परम्परागत तथा संरचनात्मक उपागम को अपनाते हुए माध्यमिक शिक्षा स्तर के लिए अध्यापक तैयार करने के लिए हेतु औपचारिक रूप से संचालित स्नातक स्तरीय 'बी.एड.' तथा अध्यापक शिक्षा में नवाचार के क्रम में संरचनात्मक उपागम का अनुसरण करते हुए शिक्षार्थी-अध्यापक उन्मुख एवं बिना पूर्व निर्धारित पाठ्यक्रम की सहायता से संचालित सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम बी.एड. 'एनरिच्ड' में प्रविष्ट होकर अध्यापक शिक्षा प्राप्त कर रहे सभी शिक्षार्थी-अध्यापक (**student teachers**) इस अध्ययन की जनसंख्या हैं।

न्यादर्श एवं न्यादर्शन

इस अध्ययन के न्यादर्श में शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ में परम्परागत पद्धति से संचालित अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम तथा सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम बी.एड. 'एनरिच्ड' कार्यक्रम से कुल 40 (प्रत्येक से **20**-20) शिक्षार्थी-अध्यापकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्शन विधि से किया गया।

प्रदत्तों के स्रोत

शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ के अन्तर्गत संचालित अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम- बी.एड. (परम्परागत) व बी.एड. 'एनरिच्ड' में अध्ययनरत न्यादर्श में चयनित शिक्षार्थी-अध्यापक प्रदत्तों के स्रोत हैं।

अध्ययन उपकरण एवं प्रदत्तों की प्रकृति

अध्ययन की उद्देश्य पूर्ति के लिए उपकरण के रूप में पुस्तकालय उपयोग पंजिका, सूचना प्रपत्र, संरचित अवलोकन प्रपत्र तथा असंरचित साक्षात्कार प्रपत्र का उपयोग किया गया। संकलित प्रदत्तों की प्रकृति गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनों प्रकार की रही।

सांख्यिकीय प्रविधि

इस अध्ययन में प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी के अंतर्गत आवृत्ति विश्लेषण, प्रतिशत विश्लेषण एवं दण्डचित्रात्मक प्रस्तुतीकरण का उपयोग किया गया है।

प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

संकलित प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण विश्लेषण एवं व्याख्या इस प्रकार है-

(अ) प्रति सप्ताह पुस्तकालय-उपयोग की तुलना

बी.एड. (परम्परागत) व बी.एड. 'एनरिच्ड' के शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा किये जाने वाले प्रति सप्ताह पुस्तकालय-उपयोग आवृत्ति की तुलना करने के लिए पुस्तकालय उपयोग पंजिका का संधारण किया गया। साथ ही न्यादर्श में चयनित शिक्षार्थी-अध्यापकों का नियमित अवलोकन किया गया। पाँच मिनिट से अधिक अवधि के लिए पुस्तकालय का उपयोग करने पर ही एक आवृत्ति प्रदान की गयी। न्यादर्श में चयनित दोनों समूहों के शिक्षार्थी-अध्यापकों की सत्र पर्यंत संकलित आवृत्तियों की गणना एवं उनका विश्लेषण किया गया। इस प्रकार दोनों समूहों के शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा प्रति सप्ताह पुस्तकालय उपयोग से सम्बन्धित प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण तालिका एवं दण्ड चित्र 1 की सहायता से किया गया है।

तालिका 1 : प्रति सप्ताह औसतन पुस्तकालय-उपयोग

क्र.सं.	विवरण	समूह 'अ'	समूह 'ब'
	प्रतिदिन	**50**	**95**
	सप्ताह में दो बार	**10**	0
	सप्ताह में दो से अधिक बार	**40**	**05**

दण्ड चित्र 1: परम्परागत तथा सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा प्रति सप्ताह औसतन पुस्तकालय-उपयोग

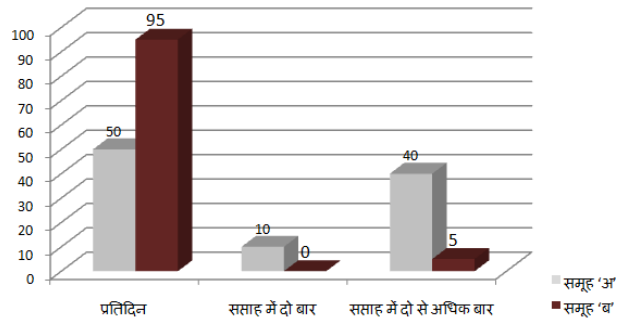

तालिका एवं दण्डचित्र 1 शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा प्रति सप्ताह पुस्तकालय के उपयोग को सूचित करती है। इस तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि समूह 'अ' की **50** प्रतिशत तथा समूह 'ब' की **95** प्रतिशत शिक्षार्थी-अध्यापक प्रतिदिन पुस्तकालय का उपयोग करती हैं। सप्ताह में दो बार उपयोग समूह 'अ' की **40** प्रतिशत और समूह 'ब' की केवल **5** प्रतिशत शिक्षार्थी-अध्यापक द्वारा किया जाता है। सप्ताह में दो बार से अधिक बार पुस्तकालय का उपयोग समूह 'अ' की **40** प्रतिशत तथा समूह 'ब' की कुल **5** प्रतिशत शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा किया जाता है। समूह 'अ' व समूह 'ब' की तुलना करने पर समूह 'अ' के प्रतिदिन उपयोग करने वाले शिक्षार्थी-अध्यापकों की तुलना में समूह 'ब' की शिक्षार्थी-अध्यापकों की संख्या बहुत अधिक है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि समूह 'अ' के अधिकाँश व समूह 'ब' की सभी शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा प्रतिदिन या सप्ताह में दो बार से अधिक पुस्तकालय का उपयोग किया जाता है। समूह 'अ' के आधे एवं समूह 'ब' की अधिकाँश शिक्षार्थी-अध्यापक पुस्तकालय का प्रतिदिन उपयोग करती हैं। समूह 'अ' व समूह 'ब' में एक भी शिक्षार्थी-अध्यापक ऐसी नहीं है जो पुस्तकालय का उपयोग नहीं करती हो।

(ब) प्रति सप्ताह औसतन पुस्तकालय उपयोग अवधि की तुलना

बी.एड. (परम्परागत) व बी.एड. 'एनरिच्ड' के शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा किये जाने वाले प्रति सप्ताह पुस्तकालय-उपयोग आवृत्ति की तुलना करने के लिए न्यादर्श में चयनित शिक्षार्थी-अध्यापकों का पुस्तकालय में नियमित अवलोकन किया गया। पाँच मिनिट से अधिक अवधि के लिए पुस्तकालय का उपयोग करने पर उपयोग अवधि का अंकन किया गया। न्यादर्श में चयनित दोनों समूहों के शिक्षार्थी-अध्यापकों की सत्र पर्यंत संकलित आवृत्तियों की गणना एवं उनका विश्लेषण किया गया। इस प्रकार दोनों समूहों के शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा प्रति सप्ताह पुस्तकालय उपयोग की अवधि से सम्बन्धित प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण तालिका एवं दण्ड चित्र 2 की सहायता से किया गया है।

तालिका 2: प्रति सप्ताह औसतन पुस्तकालय उपयोग की तुलनात्मक अवधि

क्र.सं.	विवरण	समूह 'अ'	समूह 'ब'
1.	1-3 घण्टे	55	55
2.	4-6 घण्टे	25	40
3.	7-10 घण्टे	20	0
4.	11-15 घण्टे	0	05
5.	16 से अधिक घण्टे	0	0

तालिका एवं दण्डचित्र 2 : **प्रति सप्ताह औसतन पुस्तकालय उपयोग की तुलनात्मक अवधि**

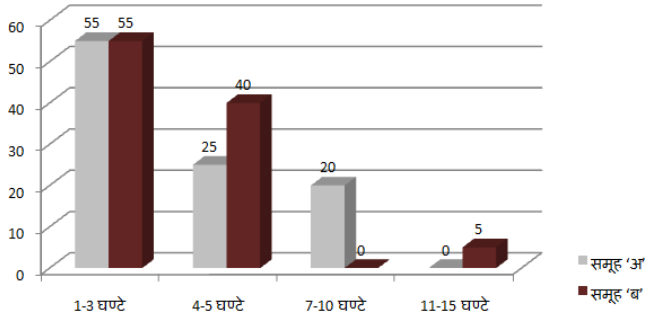

तालिका एवं दण्डचित्र 2 शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा किये गये प्रति सप्ताह पुस्तकालय उपयोग-अवधि को सूचित करता है। इस तालिका के अवलोकन से पता चलता है कि समूह 'अ' की **55** प्रतिशत शिक्षार्थी-अध्यापक **1-3** घण्टे, **25** प्रतिशत **4-6** घण्टे तथा **20** प्रतिशत 7-**10** घण्टे प्रति सप्ताह पुस्तकालय का उपयोग करते हैं जबकि समूह 'ब' की **55** प्रतिशत शिक्षार्थी-अध्यापक **1-3** घण्टे, **40** प्रतिशत **4-6** घण्टे तथा **05** प्रतिशत शिक्षार्थी-अध्यापक **11-15** घण्टे तक पुस्तकालय का उपयोग करती हैं।

उपर्युक्त विश्लेषण से पता चलता है कि दोनों समूहों की सर्वाधिक (आधे से अधिक) शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा प्रति सप्ताह **1** से **3** घण्टों तक पुस्तकालय उपयोग किया जाता है। समूह 'अ' की एक चौथाई जबकि समूह 'ब' की एक तिहाई से अधिक शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा प्रति सप्ताह **4-6** घण्टे तक पुस्तकालय का उपयोग किया जाता है। समूह 'अ' की एक चौथाई से कुछ कम शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा अधिकतम **7-15** घण्टों तक पुस्तकालय का उपयोग किया जाता है वहीं समूह 'ब' की कतिपय शिक्षार्थी-अध्यापक द्वारा अधिकतम 11-15 घण्टे प्रति सप्ताह पुस्तकालय का उपयोग किया जाता है।

(स)पुस्तकालय उपयोग का उद्देश्य

न्यादर्श में चयनित बी.एड. (परम्परागत) व बी.एड. 'एनरिच्ड' की शिक्षार्थी-अध्यापकों से पुस्तकालय उपयोग का उद्देश्य जानने के लिए पुस्तकालय में सूचना प्रपत्र एवं नियमित अवलोकन का उपयोग किया गया। शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा सूचना प्रपत्र में व्यक्त उद्देश्य एवं अवलोकन में प्रतिबिंबित उद्देश्य में अंतर की स्पष्टता के लिए असंरचित साक्षात्कार किया गया। सत्र पर्यंत संकलित सूचनाओं का विश्लेषण करते हुए उद्देश्य

के सापेक्ष आवृत्तियाँ अंकित की गयी। इस प्रकार बी.एड. (परम्परागत) व बी.एड. 'एनरिच्ड' की शिक्षार्थी-अध्यापकों के पुस्तकालय उपयोग के उद्देश्य से सम्बन्धित प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण तालिका एवं दण्ड चित्र 3 की सहायता से किया गया है।

तालिका 3 : परम्परागत तथा सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में पुस्तकालय उपयोग के उद्देश्य

क्र.सं.	उद्देश्य विवरण	समूह 'अ'	समूह 'ब'
	पूर्व ज्ञान-प्राप्ति	5	25
	अग्रिम सूचना प्राप्ति	20	50
	अतिरिक्त/विशेष अध्ययन	20	35
	दत्त कार्य की पूर्ति	30	65
	नोट्स बनाने	20	40
	परीक्षा की तैयारी	40	60
	अतिरिक्त विषय सामग्री प्राप्ति	50	55
	मनोरंजन करना	10	25
	समाचार पढ़ना/ रोजगार समाचार पढ़ना	40	90
.	अन्य (समय का सदुपयोग+ गत वर्षों के प्रश्न पत्र पढ़ने और नयी पुस्तकों की जानकारी लेने)	10	10

आरेख चित्र 3 : परम्परागत तथा सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में पुस्तकालय उपयोग के उद्देश्य

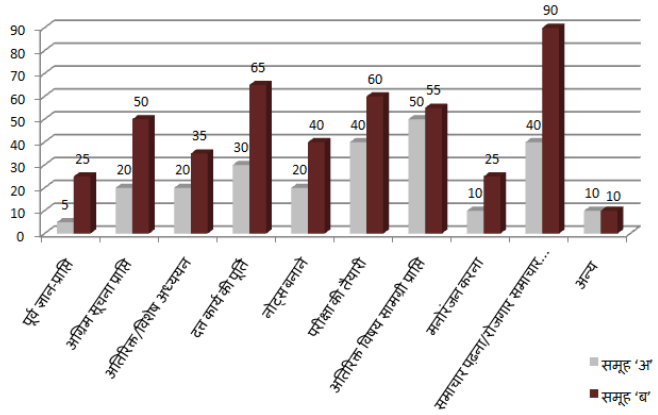

तालिका एवं आरेख चित्र 3 शिक्षार्थी-अध्यापकों के पुस्तकालय उपयोग से सम्बन्धित है। इस तालिका के अवलोकन से यह पता चलता है कि समूह 'अ' की सर्वाधिक **50** प्रतिशत शिक्षार्थी-अध्यापक अतिरिक्त विषय सामग्री प्राप्ति, **40** प्रतिशत परीक्षा की तैयारी एवं समाचार /रोजगार समाचार पढ़ने, **30** प्रतिशत दत्त कार्य की पूर्ति, 20 प्रतिशत अग्रिम सूचना प्राप्ति, अतिरिक्त/विशेष अध्ययन एवं नोट्स बनाने, 10 प्रतिशत

मनोरंजन एवं अन्य उपयोग (समय का सदुपयोग+ गत वर्षों के प्रश्न पत्र पढ़ने और नयी पुस्तकों की जानकारी लेने) तथा केवल 5 प्रतिशत पूर्व ज्ञान-प्राप्ति हेतु पुस्तकालय का उपयोग करती हैं। दूसरी ओर समूह 'ब' की सर्वाधिक 90 प्रतिशत शिक्षार्थी-अध्यापक समाचार /रोजगार समाचार पढ़ने, 65 प्रतिशत दत्त कार्य की पूर्ति, 60 प्रतिशत परीक्षा की तैयारी, 55 अतिरिक्त विषय सामग्री प्राप्ति, 50 अग्रिम सूचना प्राप्ति, 40 प्रतिशत नोट्स बनाने, 35 प्रतिशत अतिरिक्त/विशेष अध्ययन, 25 प्रतिशत मनोरंजन एवं पूर्व ज्ञान-प्राप्ति और 10 प्रतिशत अन्य उपयोग (समय का सदुपयोग+ गत वर्षों के प्रश्न पत्र पढ़ने और नयी पुस्तकों की जानकारी लेने) के लिए पुस्तकालय का उपयोग करती हैं।

जहाँ समूह 'अ' की अधिकतम आधी शिक्षार्थी-अध्यापक अतिरिक्त विषय सामग्री प्राप्ति हेतु पुस्तकालय का अधिक उपयोग करती हैं वहीं समूह 'ब' की आधी से अधिक शिक्षार्थी-अध्यापक समाचार/रोजगार समाचार पढ़ने, दत्त कार्य की पूर्ति, परीक्षा की तैयारी एवं अग्रिम सूचना प्राप्ति के लिए तथा आधी शिक्षार्थी-अध्यापक अतिरिक्त विषय सामग्री प्राप्ति हेतु पुस्तकालय का अधिक उपयोग करती हैं। जहाँ एक ओर समूह 'अ' की एक तिहाई से अधिक शिक्षार्थी-अध्यापक समाचार पढ़ना/रोजगार समाचार पढ़ने एवं परीक्षा की तैयारी और लगभग एक तिहाई शिक्षार्थी-अध्यापक दत्त कार्य की पूर्ति; एक चौथाई से कुछ कम शिक्षार्थी-अध्यापक अग्रिम सूचना प्राप्ति, नोट्स बनाने एवं अतिरिक्त/विशेष अध्ययन के लिए तथा कतिपय शिक्षार्थी-अध्यापक मनोरंजन, पूर्व ज्ञान-प्राप्ति और अन्य उपयोग (समय का सदुपयोग+ गत वर्षों के प्रश्न पत्र पढ़ने और नयी पुस्तकों की जानकारी लेने) के लिए पुस्तकालय का उपयोग करती हैं वहीं दूसरी ओर समूह 'ब' की एक तिहाई से अधिक शिक्षार्थी-अध्यापक नोट्स बनाने व अतिरिक्त/विशेष अध्ययन करने; एक चौथाई मनोरंजन करने व पूर्व ज्ञान अर्जित करने एवं कतिपय शिक्षार्थी-अध्यापक अन्य उपयोग (समय का सदुपयोग+ गत वर्षों के प्रश्न पत्र पढ़ने और नयी पुस्तकों की जानकारी लेने) हेतु पुस्तकालय का उपयोग करती हैं।

इससे यह स्पष्ट होता है कि अन्य उपयोग (समय का सदुपयोग, गत वर्षों के प्रश्न पत्र पढ़ने और नयी पुस्तकों की जानकारी लेने) के अतिरिक्त सभी उद्देश्यों (समाचार पढ़ना/रोजगार समाचार पढ़ना, दत्त कार्य की पूर्ति, परीक्षा की तैयारी, अतिरिक्त विषय सामग्री प्राप्ति, अग्रिम सूचना प्राप्ति, नोट्स बनाने, अतिरिक्त/विशेष अध्ययन, मनोरंजन तथा पूर्व ज्ञान-प्राप्ति के लिए समूह 'ब' की शिक्षार्थी-अध्यापक समूह 'अ' की तुलना में पुस्तकालय का अधिक उपयोग करती हैं।

उपर्युक्त तालिका में उल्लेखित पुस्तकालय उपयोग के उद्देश्यों को उनकी प्रकृति के अनुसार तीन श्रेणियों- ज्ञान प्राप्ति (क्र.सं. 1 से 3), पाठ्यक्रम की तैयारी (4 से 7) तथा (3) विविध उपयोग (क्र.सं. 8 से 12) में वर्गीकृत करने पर यह ज्ञात होता है कि दोनों समूहों में से समूह 'ब' की शिक्षार्थी-अध्यापक समूह 'अ' की तुलना में तीन श्रेणियों (ज्ञान प्राप्ति, पाठ्यक्रम तैयारी एवं विविध उपयोग) से सम्बन्धित उद्देश्यों के लिए पुस्तकालय का अधिक उपयोग करती हैं। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि समूह 'अ' की तुलना में समूह 'ब' की शिक्षार्थी-अध्यापक एक बार में एकाधिक उद्देश्यों के लिए पुस्तकालय का उपयोग करती हैं।

निष्कर्ष विवेचना एवं निहितार्थ

संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण से यह पाया गया कि समूह 'अ' के अधिकाँश व समूह 'ब' की सभी शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा प्रतिदिन या सप्ताह में दो बार से अधिक पुस्तकालय का उपयोग किया जाता है। समूह 'अ' के आधे एवं समूह 'ब' की अधिकाँश शिक्षार्थी-अध्यापक पुस्तकालय का प्रतिदिन उपयोग करती हैं।

समूह 'अ' व समूह 'ब' में एक भी शिक्षार्थी-अध्यापक ऐसी नहीं है जो पुस्तकालय का उपयोग नहीं करती हो। पुस्तकालय उपयोग की यह प्रवृत्ति अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में शिक्षार्थी-अध्यापकों दिए जाने वाले निवेश के सापेक्ष है। एक प्रभावी शिक्षक बनने हेतु विविध सम्प्रत्ययों, दक्षताओं और अन्य गुणों का विकास के लिए किस तरह की सामग्री पढ़ी जाये; किसी विषय सामग्री को किन प्रक्रियात्मक निवेशों (परिचर्चा, समस्या समाधान, प्रायोजना, कार्यशाला, व्यक्तिगत प्रस्तुतीकरण, पुस्तकालय कार्य आदि) द्वारा अर्जित किया जाना है, यह निर्णय जब स्वयं शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा किया जाता है, तब पुस्तकालय उपयोग की नियमित आवश्यकता होती है।

दोनों समूहों की सर्वाधिक (आधे से अधिक) शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा प्रति सप्ताह **1** से **3** घण्टों तक पुस्तकालय उपयोग किया जाता है। समूह 'अ' की एक चौथाई जबकि समूह 'ब' की एक तिहाई से अधिक शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा प्रति सप्ताह **4-6** घण्टे तक पुस्तकालय का उपयोग किया जाता है। समूह 'अ' की एक चौथाई से कुछ कम शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा अधिकतम **7-15** घण्टों तक पुस्तकालय का उपयोग किया जाता है वहीं समूह 'ब' की कतिपय शिक्षार्थी-अध्यापक द्वारा अधिकतम 11-15 घण्टे प्रति सप्ताह पुस्तकालय का उपयोग किया जाता है। सम्प्रत्ययात्मक रूप से जब शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का निर्धारण स्वयं शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा किया जा रहा है, तब उनके पुस्तकालय उपयोग में भी विशिष्टता अपेक्षित है। कई शिक्षण-अधिगम प्रविधियाँ/उपागम ऐसे हैं जिनमें शिक्षार्थी-अध्यापकों को पुस्तकालय की आवश्यकता प्रायः अधिक रहती है यथा - समस्या समाधान उपागम, परिचर्चा; लघु समूह, वृहत् समूह परियोजना, संगोष्ठी पर्यवेक्षित अध्ययन, विकासात्मक अध्ययन आदि। अधिगम के लिए इन प्रविधियों/उपागमों पर अधिक निर्भरता होने के कारण समूह 'अ' की तुलना में समूह 'ब' की शिक्षार्थी-अध्यापकों को प्रति सप्ताह अधिक अवधि तक पुस्तकालय का उपयोग करने की आवश्यकता होनी चाहिए थी। समूह 'अ' की शिक्षार्थी-अध्यापकों का प्रति सप्ताह 11-15 घण्टे तक पुस्तकालय उपयोग नहीं करने का कारण नियमित कक्षाओं का लगना, समय सारणी में पुस्तकालय उपयोग के लिए कालांश की कम उपलब्धता और शिक्षकों के शिक्षण के प्रति उनकी संतुष्टि या और कम अभिप्रेरण हो सकता है। ऐसे में दोनों ही समूह की शिक्षार्थी-अध्यापकों को प्रति सप्ताह अधिक अवधि तक पुस्तकालय उपयोग करने के लिए उत्प्रेरित करने की आवश्यकता है।

दोनों समूहों में से समूह 'ब' की शिक्षार्थी-अध्यापक समूह 'अ' की तुलना में तीन श्रेणियों (ज्ञान प्राप्ति, पाठ्यक्रम तैयारी एवं विविध उपयोग) से सम्बन्धित उद्देश्यों के लिए पुस्तकालय का अधिक उपयोग करती हैं। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि समूह 'अ' की तुलना में समूह 'ब' की शिक्षार्थी-अध्यापक एक बार में एकाधिक उद्देश्यों के लिए पुस्तकालय का उपयोग करती हैं। समूह 'ब' की शिक्षार्थी-अध्यापकों का ज्ञान प्राप्ति, पाठ्यक्रम तैयारी एवं विविध उपयोग से सम्बन्धित अधिकांश उद्देश्यों के लिए पुस्तकालय का अधिक उपयोग किया जाना यह संसूचित करता है कि प्रभावी शिक्षक बनने हेतु विविध सम्प्रत्ययों, दक्षताओं और अन्य गुणों का विकास के लिए किस तरह की सामग्री पढ़ी जाये; किसी विषय सामग्री को किन प्रक्रियात्मक निवेशों (परिचर्चा, समस्या समाधान, प्रायोजना, कार्यशाला, व्यक्तिगत प्रस्तुतीकरण, पुस्तकालय कार्य आदि) द्वारा अर्जित किया जाना है, यह निर्णय जितना स्वयं शिक्षार्थी-अध्यापकों द्वारा किया जाता है। उनके पुस्तकालय उपयोग में भी उतनी विशिष्टता आती है। अतः पूर्व निर्धारित पाठ्यक्रम की सहायता से परम्परागत रूप से संचालित स्नातक स्तरीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम को और अधिक सहभागितापूर्ण बनाए जाने की आवश्यकता है।

यह अध्ययन एक वर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के उत्पादों पर किया गया है। वर्तमान में पूरे भारत वर्ष में दो वर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का क्रियान्वयन शुरू हो गया है। अतः बदली हुई परिस्थिति में पुनः अध्ययन करते हुए निष्कर्षों की पुष्टि एवं व्याख्या की जा सकती है।

संदर्भ सूची

गोस्वामी, वी. (2003). *सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का शिक्षार्थी अध्यापक के सम्प्रत्ययात्मक विकास एवं स्व-विकास पर प्रभाव.* शोध-प्रबंध. वनस्थली: वनस्थली विद्यापीठ.

गोस्वामी वी. एवं सुराणा, ए. (2002). *सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में मूल्यांकन प्रक्रिया: एक अध्ययन.* लघु शोध-प्रायोजना. वनस्थली: वनस्थली विद्यापीठ.

गुप्ता, वी. (1977). *चिल्ड्रेन लिटरेचर एंड रीडिंग हैबिट.* न्यू देल्ही: दीप एंड दीप पब्लिशर्स.

जंगीर, एन. के. एवं आहूजा, ए. (1999). *प्रभावकारी शिक्षण प्रशिक्षण-सहभागिता आधारित अधिगम.* नई दिल्ली: मयूर पेपरबैक्स.

लक्ष्मी, टी. के. एस. एट आल (2000). *दा अन्वेषणा एक्सपीरियंस - टीई विथ अ डिफरेंस.* अ मोनोग्राफ. फैकल्टी ऑफ़ एजुकेशन. वनस्थली: वनस्थली विद्यापीठ.

जुसवुसिएने, पी. एंड तौत्केविकिएने, जी. (2004). दा लाइब्रेरी लर्निंग एनवायरनमेंट अस अ पार्ट ऑफ़ यूनिवर्सिटी एजुकेशनल एनवायरनमेंट. *पेपर प्रेसेंटेड एट दा यूरोपियन कांफ्रेंस ऑन एजुकेशनल रिसर्च. यूनिवर्सिटी ऑफ़ क्रीट.* सेप्टेम्बर, 22-25.
Retrieved http://www.leeds.ac.uk/educol/documents/00003737**.html**

पोरवाल, आर. (2003). *सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का विद्यार्थी शिक्षकों की अधिगम प्रक्रिया का विश्लेषण.* लघु शोध-प्रबंध. वनस्थली: वनस्थली विद्यापीठ.

यू.सी.आई.एस.ए. (2000). *लर्निंग रिसोर्स फॉर टीचर एजुकेशनः अ गाइड टू बेस्ट प्रैक्टिसः अ प्रोजेक्ट रिपोर्ट.*
Retrieved http://www.*ucisa*.ac.uk/resources/docs/library/lrittreport.